

॥ नमो भगवते ॥

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-249

५
०५
५५



ॐ नन्दारुद्रा जगत्सम्या कपिता रूपावति सर्वपापविना सार्थः पवित्राय उमहा
 का रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ वाकानां ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥
 नन्दारुद्रा जगत्सम्या कपिता रूपावति सर्वपापविना सार्थः पवित्राय उमहा
 का रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ वाकानां ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥

दिव्यकः रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ वाकानां ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥
 नन्दारुद्रा जगत्सम्या कपिता रूपावति सर्वपापविना सार्थः पवित्राय उमहा
 का रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ वाकानां ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥
 नन्दारुद्रा जगत्सम्या कपिता रूपावति सर्वपापविना सार्थः पवित्राय उमहा
 का रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ वाकानां ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥ रूपावति रूपावति मयं रूपावति कं ॥

[illegible]

पञ्चेशुचिकवर्जं विहाय ४ॐ ज्ञानवीनाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञयाय स्वाहा ॥ ॐ विजया
य स्वाहा ॥ ॐ जयवि स्वाहा ॥ तर्ज २४ ॥ नयथ क्रमं ॐ निराक्रमं पर्यन्तं न्य
सत् ॥ कमलावर्हन्तं ध्याधिष्ठाय ४॥ ॐ चलश्चिलीश्चूलश्चलश्चिलीश्च
मूलश्च महाकान्तिक सर्वविघ्नान्छान्ते हृद् ॥ ॐ सर्वतथागत पूजामघप्रव
नसमूहं शुनहि गगधकही ॥ ॐ हा दीपकनश्चकनश्चहश्चनूश्चगंभ्रस्वाहा ॥ गंध
॥ ॐ वनश्च वनदायकहहा ४ नयय स्वाहा ॥ नयय ॥ ॐ वज्रयुग्म स्वाहा ॥ ॐ ज्वा
लामूर्ख सर्वधर्मान्तीत्यादि ॥ वली ॥ ॐ वज्रयुग्म ॥ ह्रम ॥ ॥ स्थाने मन ऊर्ध्व

[illegible]

ॐ अमाघयाहाला कंठनाय वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं लाकविजया
य अमाघपाशप्रतिहृत् कीं स्वाहा ॥ ह्रीं हूं रुद्रस्वाहा ॥ ॐ अमाघयाहा कीं स्वाहा
॥ दाता ॥ ॐ आ अमीता हा य वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ थरदा ॥ ॐ तानाय वज्र
पूर्यप्रतिच्छाहा ॥ स्वडास ॥ ॐ आ रूकृतिय वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ जडा
स ॥ ॐ आ अमाघीकुसाय वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ हुडाभ्य ॥ ॐ आ सुधनाय
वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ जडाकुदस ॥ ॥ रथानपिरुधपूर्वदान ॥ दजीस्मवर्त
नो मे प्रय वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा ॥ ॐ आर्यगगाधगीजाय वज्रपूर्यप्रतिच्छाहा

हा॥ॐ आर्य समकृदाय वज्रयूष्य प्रतीक स्वाहा॥ॐ आर्य वज्रयाधाय वज्रयू
 ष्य प्रतीक स्वाहा॥ॐ आर्य मंशदाय वज्रयूष्य प्रतीक स्वाहा॥ॐ आर्य सर्व
 धीविकीरिधाय वज्रयूष्य प्रतीक स्वाहा॥ॐ आर्य कितिगरीय वज्रयूष्य प्रती
 क स्वाहा॥ॐ आर्य यगरीय वज्रयूष्य प्रतीक स्वाहा॥ ॥ वाक् पूर्ववाने ॥ ला
 कपाल॥ॐ ॐ द्याय स्वाहा॥ स्वादि॥ पीला घन्तु॥ॐ जी कान् सीतवीनार्थं धृ
 त्माधर्मं ज्ञायात्सनामान्ती॥ लाकनार्थं नमामहे॥ पायदं सधाम्॥ ततामेगी
 कनूधमदिताय जामिचतुर्वस्त्रविहगान्तावयत्॥ समस्तस्वावनजीगमय

दार्थस्वस्त्रीनचरुदयधप्रतिविस्त्रवत्विचीरुष॥ ॥ स्वतदीजविनरहोत्तमे
 कस्य धूमताया लिधीविताय विध्वचिरुमधिस्त्राय॥ॐ आ विलादयत्तं॥ समु
 द्नताचनत्तं॥ नत्तगुहाया॥ॐ कमलागर्ह स्वाहा॥ यध॥ॐ ज्ञमृताताय स्वा
 हा॥ वाधीचीरुविहय गार्ह स्वाहा॥ॐ आली कालीस्वतावसूर्यचन्द्रसूर्यसूरी
 पूर्य॥ॐ शुगुजीकान्ध समुत्पन्नपम तदीजाधिष्ठितपचोहानकमधरा
 गवनी ज्ञमाघपास लाकध्वनी विष्णु कपनी समयदस्त्रिती सर्वांगशुक्ली उः
 कमूर्खी तपस्त्रिवसधनी॥ अष्टशुजी दजीरध अर्यवनदा पासा ऊमा लाधनीः

वामविधुदपूरकपमकमधुलधनं जतामकुतिनी अमृतीकृत्तनसंघर्षतावय
 त्॥ तगवन्नास्य ता नास्यामवर्षा दिशुजा दजीध वनदावा म्पतीलात्यनधना
 ॥ सर्वालीकानरुधीता ॥ वामपूरकृटि पीतवर्षा चगुरुजा दजीरध प्रथमगुजन
 वनद्वीतिथिधं तगवन्कं नमस्कानं कृती वामप्रथगुजन ॥ पालिजातिपूर्य्यी दीति
 यत ॥ अऊमालाधनी तगवन्की पूनत अमाघीकृत्तनकवर्षा अऊमपाठाधनी स
 धनकुमान कनकवर्षा कनयतीजली प्रह्मपात्रमिता पूरकधनी हयगीवनका
 वर्षा दीतीयतुजध दजीधरुजध तगवन्तमस्कानकृती वामगुजनयमधनीत

तावहि पूर्वमेजीयपिवर्षा नाग पूर्यधनी गगधगीज सीत पीत स्रधर्मगीजध
 नी समकतद्विपितवर्षा नत्त मलीधनी वजपाधी सितपित वजरुमी मेशघावी
 कृकूमवर्षा ॥ निलात्यलधनी सर्वनीवर्षा विस्कीति ॥ अमवर्षा विधवजरुमी
 ॥ जितिगर्तभीतपीतवर्षा चक्रधनी वगर्तनीलवर्षा नकनत्तधनी ॥ तता
 अगत्यात् ॥ अंजयाय स्वाहा ॥ अंविजयाय स्वाहा ॥ अंजयविजयाय स्वाहा ॥ अं
 आहू ॥ प्रिकाया धिष्ठाध ॥ ततस्वददय अकानध चद्रमधुली ॥ तदूयनिजिं
 कानध तदस्तिविरुषिती ॥ दशदिग्लोकधगुगत्या ॥ अमाघपासलोकस्वनी

नी

मंदलाय सनायै हृष्टा ॥ ॥ अस्थिकैषार्थयत् ॥ यथाहीजातमायनखादि
 २ ॥ ॐ आवकादकातिविचरमी ॥ अस्थिकैमहावजैर्यादि ॥ ॐ सर्ववृक्षचू
 दामहिर्यादि ॥ मकूत ॥ ॐ वज्रधातुधनीर्यादि ॥ पंचमस्थिक ॥ ॐ हूं ॐ
 हा ॐ आ ॐ अमाघयासनामतथागतगुरुवसाख्यादि ॥ ॐ आ ॐ अमाघयास
 है ॥ जटामकूतामितातुकुतरावनीतावयत् ॥ ॥ आकर्षण ॥ पायादि ॥
 पूष्यनाथ ॥ र्यवायवानपूजा ॥ लाठ्याघट्टावादेतस्तुतिर्त्यन ॥ ॥ तता
 जाय ॥ पूर्ववत् आपा पूर्णलाघं तु तर्पण ॥ ततावलीतावना ॥ ॥ ततार्य

न

कान्धवायुमैधुलीतदूर्नकाक्ष अनीमधुली ॥ ककान्धवलीका ॥ तदूर्न
 आकान्धवलीका ॥ तदूर्न आकान्धवलीका ॥ वलीता ॥ धु ॥ धालीता ॥ क ॥ तदूर्न
 वूर्जजीविहूं ॥ लीमीयीतीवी ॥ र्यकान्जान्दधीतिष्ठितपीचीमृतपंच
 दियनूयधनिव्याय ॥ वायुधलीतहालितामिताप्रवीलिधीवीजाऊनाधिकी
 अस्थिवतान्वर्षद्वीनूर्यहृष्टा अमितितुतीचितयत् ॥ ॐ आ हूं ॐ हूं ॐ
 नाधिष्ठित ॥ ॥ पूर्ववत् आपा पूर्णलाघं तु तर्पण ॥ वलीमाला ॥ ॐ अ
 माघपाशकी ॥ ॐ सर्वदृष्टासमेयमृदाप्रहजक ॥ ॐ देवलीदृगाधदिसहितगु

9

[illegible]

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-249

बुद्ध नाम तु यार
सर्वमूर्त्ति यागु सा ॥

धूलि आदि स्थापनायायः सूर्या ग्रहादिः गुरु लिवायकः पूजा संकल्पयायक
 अनंगक स पूजा या के को य ॥ गुरु मल ल दानेः सिन पूजा दि गुरु सिन पि दाने
 विरु क ले स पूजाः मूल म लु लः मूल के सः सा ला दे वः पु ति मा दे व पू जाः स्वा
 ल व गु धाः आ क र्ष नः धू पूः ध्यान ॥

नि ली जनः स नो न या केः रु स्ता न सि द्धः स्वी नः रु रु काः ने
 व दः द ल म गः इ इ का य ॥ पू षा आ सः को य या गुरु ॥ ना स्ता च ० वा द न ॥ मु ति
 ॥ धना धर्म नि प निः ध का लि क थि र्द रु के ॥ पू जा सं क ल्प या के गुरु म
 सु न केः व लि वि य के ॥ प रु ग र वि यः प रु ग र याः स्वा का नेः द क्षि ना का य
 सा जन या केः लो क पा ल व वि वि स जन या केः पि स्वा ला षू को य ॥ ध ना व रु

ना ल सी ला य ॥ उ व जन रु द्दः ना हा गि न रु ह ॥ सि का ला य ॥ के स्वी ड पू जाः वृ ष ऽ रु मः स
 म लु ल मू त मी ॥ ॥ म लु ल स सि द्ध न य के ॥ उ गुर्य क निः ध ने क निः आ
 ग रु र वि स्वा हा ॥ अ चि त यो द्ध वाः स रु द्ध रु गाः अ ने क न न रु स रु दि का
 य नः आ पू न स मी नः ग रु षू म लु ल न मा सु तः शी व गु धा न नि स दा ॥ ध न
 ध मू य नि ताः ध र्म द स ना या का नेः रु डा पू ० प थि वि स वृ य केः ष डा पू ०
 थ का य के ॥ ॥ द रु नि न जा नू म लु लः प थि वा पु ति थ यः य म रु नी ज वि
 गुरु अ वा पि लाः गुरु ना पिः द सि त वे ॥ ध न सि ष प नि स्य नः रु डा पू ०
 प थि वि वृ या डाः ष डा पू लि थ रु क या डाः ला हा रु हा जो रु ल या डाः गुरु या के
 वि न नि या तीः हो गुरुः शी व गु धा ना जन नि या गुरुः रु द्ध व रु द न गुरु अ नि

ॐ कृष्ण लोः त्रिमिता प्रसन्नस्य विद्या कृन् धर्मः ग्रन्थमा कृन् चीनाडाः सि
 षा पनि धर्म विनति यातं ॥ **ग्रन्थवाच ॥** ह सि ष धर्म मु नि प निः ग्रन्थ जी व शु
 चि नामा ना य गूः वृत्त द न गूः कृष्ण ल साः त्रि न क नः य क चि ल या ना डो द डो
 ह ग्रा ह्य हं त्वान म स्य मि ग्रन्थ ना थं प्र सि ध म ॥ **कि ना न क ॥ ह नं हा कृष्ण ल पं**
न म ॥ ॥ न क कृ न पृ त्वाः कृ न इ हि ना वाः ग्व सि वाः उ पा सि का वा ॥ ह ध
 र्म मु नि थु ग्रन्थ क द न या तः कृ न डो नः का य न न डोः क्का च न न डोः रि कृ न न
 डोः रि कृ नि न न डोः जन प नि दा शः कि जाः ग्व सि ज न न डोः ना ज न न डो ॥
अथ वा वा चि ल साः अ वा चि न शः दु नि दा ह साः अ द नि डा ह व नि ॥
 ह ध र्म मु नि प नि थु ग्रन्थ क द न शः ना ग रू या डा ची न कृ या ना ग श म नी कृ या

डाः अनि डाः ह नं दु नि ड रू या डा ची न शः दु नि ड म रू या डा दु ना द रू या डाः
 डा यि डा ध र्म गू ल ला य द डा ध र्म ग्रन्थ श्री कृष्ण द य क ल रू या ॥ **१२ गन्धर्वा**
उ ग्रा रि मूर्ष ॥ पु न र्वा द ह नः कृ पाः १३ गन्ध र्वा ल नः माल कृ यः १४ चि न म या यः १५
 चि व र्मु ति यः १६ र्वे ला ला थ म स म उ म यः १७ मि सः १८ चू को डा व पृ य ॥ **का य कं रि**
वि पा यः वा चि कं नू च र्त्वि चः मान सं रि य का नं च द श म कं कृ स नं ॥ ह सि षः कि मि
 स थ धि गू मि ता पा प या य म रू गू ल ल न मालः ग धि गू पा प ध न साः सु नि ड या
 ना पा पः त्व ना द डाः ह नं व च न या ना गू पा पः पा ना द डाः ह न नू ग ल या ना पा प स्य
 ना द डा धि गू पा प हि ना नी ल न मालः थ वि गू हि ना पा प चू कृ दाल सा ॥ **प्रा नं रि**
पा प ॥ प्र या प्रा न का य म रू डाः प्रा न का ल साः अ य म द यि डा म का ल सा अ य

वद्धयज्ञेयिडा॥ **अदनादान॥** भवनमविषकं **कृ**: दानकालसा: नयमवना
डा: डामिदुइयिडा॥ **कामथ**॥ भवयासि कलातदयकलसा: थडा: कलात: का
य: वदुडाविशगइयिडा: मदयकसा: विद्यावैतइयुडा॥ धनैखतासनिदुया
कापापइला॥ **नथवा**॥ भवयातकसषमूतष: कानाइलसा: लोकयाकं हे
लाइयिडा: अपवातडीतिइयिडा: मझातसा: इसईतइयिडा॥ **पालथ**॥ पुयातमू
न्नालकं विलविलसा: कूठचलगिडा: कूठनाउयिडा: विलमविलसा: पलवास
नादयिडा॥ **पदुम**॥ भवयात: कौरववेषझातसा: लोकयाकं: निद्राइयिडा: म
झातसा लोकयाकं आनन्दइयिडा॥ **असहिनी**॥ भवयात: हेकासापापन: **सि**
मिठनापविज्ञागइयिडा: हेमकालसा: मिठ: लाहदयिडा: धपमा: वचनयाना

पापइला॥ **अवीया**॥ भवका ननपाडा कानसा: तिमाहिताइयिडा: मझालसा
माहाइलनलाना उभाकुलायिडा॥ **वापाद**॥ पुनयावापदयतसा: पनयात **मि**डा
यातसा तिबमाहिताइयिडा: मयातसा: कुमारीनइयिडा॥ **नरवामिथदि**॥ सा
मुनिसुलयातसा: तिबविषिइयिडा: मयातसा: महातागमासिइया: मोड
लायुडा: थुलिसितापाप: कालतमाला॥ थथि कपमस्वययागू वृत्तदनेयात
दसाकुसलपापकालतमाल: हनी: ला: का: वि: चिकै: थ: थयुललगाव: नि
हूथुगू वृत्तदनेरुडालाधकै: गू नूनै आहादयकली॥ **रुथा**॥ **शिवगुन्धना**
तागवतिथयात॥ कथंजावत: किं वंतावयत: अथवायावत: गतिगामि
नितावत: वद्धयेत॥ **सिषवाव**॥ तागूरनिष्ठयनै: थुक्कवगुन्धनाजननि

यागः अष्टिभु मङ्ग यकैः थ जिर्वं वहस्ये तलेः निस्स थूगु उरुदने शलधकैः ला
हात हा जीलापा डीः गुरु माके विनहि यार्ती ॥ रत्ना ॥ **स्वानु कृदा लः मलु ल का**
यका वाचकै ॥ अं वृक्ष नाम मलु ला वन्दा क विमने स्था हा ॥ मलु ल स स्था न
वी यकै ॥ उं श्री वृक्ष न स्था हा ॥ उं श्री वृक्ष न निय स्था हा ॥ उं श्री न स्था हा ॥ त न नि
वा न निय स्था हा ॥ **म धा स ॥** उं वृक्ष न सा ग न निर्धा षा य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना या ची स ॥**
उं आर्य वला कि त स्व ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना या म धा स ॥** उं वृक्ष ना य स्था हा ॥ **व**
वृक्ष न ना या ख डी स ॥ उं वृक्ष ना ये वी य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना या डी न ॥** उं वृक्ष ना
य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना या र डी स ॥** उं वृक्ष ल ज डी ला य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य डी स ॥**
धन विम ॥ उं चिवि कृ दलिय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य ॥** उं कलि मा न स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**

न ॥ उं मूषा डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं मूषा डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
का न ॥ उं स न स ति डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं स न स ति डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
उं मा लि र डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं मूषा डाय स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
का न ॥ उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं संशम नि ध ना य स्था हा ॥ उं प न लि डा ना य स्था हा ॥
मलु न ना य विम ॥ ॥ पक्ष प ना न पु जा ॥ उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
का न ॥ उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
ता न निः सा द न ना पा यी का द वि न स्ति सि धिः पु दा य का ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
मलु ल ॥ उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम ॥** उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**
अ क नि शा र व न नः श्री वृक्ष न ना य विम ॥ उं वृक्ष न ना य स्था हा ॥ **वृक्ष न ना य विम**

नमः मन्त्र॥ ॐ शिष्य श्री क नि दान्य क निः प्र हित ग व तिः आ ग क र वि स्वा हा ॥ म ल
 ल स न म क ॥ ॐ आ र्य शी व स्रु ध नाः वा द्वि ग द ध क व च व र्ण स्वा हा ॥ व स का के न
 सि का वा य क ॥ ध न अ र्च या क म लु ॥ वा क थ ॥ ॐ ॐ का र ग व ति शी व स्रु ध ना नि दान
 मू किः अ स र्म हि नं गू न र्नि दानिः का च न न त म कू नः व दू ज न ध न व धिः सा ग न न त
 व षा नि र ग व ति व स्रु ध ना त का न क र्ति अ र्च प्र ति कृ त्वा हा ॥ गू नः द्वा र्श मी न य क म लु
 सः दि न द्वा ॥ ॐ न मा न त्रु श यः न मा र ग व द्वा व स्रु ध ना यः ज ग त जि वः स र्व क नि रु ल ह र्क
 दि व नृ पि त व स्रु धः शी य क निः प्र षि क लिः त य ना स निः स र्व दू ष्ठा नीः उ ज र अ र्त्त गी र
 व कू नः म म का र्य सि धि क नि स्वा हा ॥ ध न व कू प चा न पू जा ॥ मु ति ॥ सा स्ता ज न र्यः स र्व दू ध म
 ना ज य ना पा न ग म नि रु ल पा फः इ द्र वि न न म म्बु त ॥ ध नाः जी वा ल पू जा ॥ जी वा ल या ना ध म ह
 ल ॥ वा क थ ॥ ॐ शी र्म म कू प न म स्वा हा ॥ ॐ शी दि फ कू प स्वा हा ॥ ॐ शी दि य कू प स्वा हा ॥ ॐ

ॐ ॐ ध नै क निय स्वा हा ॥ २

ॐ प्र षि क निय स्वा हा ॥ वा आ कू म नृ त ना क ॥ २९

ज्ञान कू प स्वा हा ॥ ॐ प्र द्वा पा न मि ता य स्वा हा ॥ ॐ शी व र स र्व ह य स्वा हा ॥ ॐ शी सूर म ग ले स्वा हा ॥
 ॐ शी म ग ल म ति य हा ॥ ॐ शी अ ले र स्वा हा ॥ ॐ शी व ल्य र स्वा हा ॥ ॐ उ र चा त नि य स्वा हा ॥ ॐ शी
 उ र्क द नि य स्वा हा ॥ ॐ शी स न स्व ति द वि य स्वा हा ॥ ॐ स्रु व की य स्वा हा ॥ ॐ शी ध न व ति य स्वा
 हा ॥ ॐ शी दान्य व ति य मि हा ॥ ॐ शी कू कू म स्वा हा ॥ ॐ शी ध न न त्रु स्वा हा ॥ ॐ वि न न न स्वा हा ॥
 ॐ वि ष्व नृ प स्वा हा ॥ ॐ शी वि ष्व ध मि ल स्वा हा ॥ ॐ वि ष्व द्र कू व स्वा हा ॥ ॐ शी अ कू ल स्वा हा ॥
 ॐ प्र ता कू ल स्वा हा ॥ ॐ अ मा चा कू ल र ह वं ४ हा ॥ आ मि सि दि प्र व र्ण नि य स्वा हा ॥ ॐ शी
 ना ल य म र्ति ग व ति व स्रु ध ना ना म दान नि म हा न आ ब र्ण गू फी क नि य स्वा हा ॥ ॐ शी न क र
 स्वा हा ॥ ॐ शी ध क र स्वा हा ॥ ॐ शी उ क र स्वा हा ॥ ॐ शी व र ध न ति धा पा य स्वा हा ॥ ॐ न था ग न
 स्रु म नृ स्म न य स्वा हा ॥ ॐ शी व द्र स्रु म नृ स्म न य स्वा हा ॥ ॐ ध र्म स्रु म नृ स्म न य स्वा हा ॥
 ॐ शी स र्व स्रु म नृ स्म न य स्वा हा ॥ ॐ शी श्र मि म ति य स्वा हा ॥ ॐ प्र षि म ति य स्वा हा ॥ ॐ शी आ

धनसिद्धिर्न गुरुपाकः लाहा हा जलपाडा विनतिया ती ॥ ॥ हा गुरु कुल
 पालनः कि ग द स ना पा डा आ हा द य का डा विष्णातः रु त सा नि थ र सा डा
 रु कः आ हा रु लः थ नि जि मि सः थ जि व द त ल न थ र द न्य म रु याः के र म ल
 डा क सूर्यः के र म उ अ रु लाः थ नि म क सूर्य उ त्प ति रु लाः थ थ अ हा ना
 उ रु क ध ल ल पाः नि थ थ ल ल प म रु याः अ प्र स न न व ध मा या ह न ध क वि
 न तिया ती ॥ ॥ थ न सि ध या रा षा द डा डाः गुरु न आ हा द य क लः ह सि धाः कु
 प मि स न नि थ थ व रु द ने म रु त ना डाः उ पा य द नि ॥ ॥ गु क मा नि आ ना ध
 ना या ना डाः मा हा या न च र्था या ह न ध क गुरु न आ हा द य क लः ॥ **धनसिद्धि**
पनिर्गन वर का सिद्धि का हा म रु ल रु न ॥ ॥ थ न कि र म ता नः अ
 प्रा पु ति ना या दि ॥ स ता रु न ॥ ये र्मा वा ॥ सक ल या म रु वि स र्ज न ॥ द द कि ना ॥ सर्ग

गानः सिद्धि लू य ॥ रु स क सि न मू का का यः द ता ता नः सक ल या ती ति कः क ल सा
 रि ष क वि य ॥ हा द कि ना ॥ ध मू प नि स नः व सूर धा ग म लु ल व सा दः ध ध र्म स र्प
 वि स र्ज न ॥ गुरु न रु मा प न पा पा डाः मू ल म लु ल दि ग रु स वि स र्ज न या य ॥ क ता
 व स र्व स त्वा र्थ सि ति रु त्वा ज थ नू ग ग रु क र्ध पू न या यः ग म ना य वः उ आ ह व
 सूर ध म लु ल वि स र्ज न द्वा र्भा ॥ थ न ध र्म नि प नि स नः थ डी र्स्वा पू वा ता स डा य क
 व सूर ध ना क ल स क सा ते रु नि या कः ध न जा रा या ना डाः ति र्थ स य ना डाः व नू न क
 ल स या रु पू जा या यः रु र्ध या कः व सूर ध ना क ल स दा रु ल पः रु कः ष सि चू क रु ना
 थ न लि ॥ रु स क मा नि पू जाः स म य च रुः अ न च रुः क ला आ म रु ना ॥ ॥ रु ति ति या व
 रु स मा फ ॥ स म रु १००४ मि आ रा द क रु या २ पा ज ३ सा ॥ रु का पू न म स न ग न या
 वा हा न रु या व रु चार्थ मा न रु र्ध नः थ डा या न द का न या रु ला सू री ॥ ॥